शान्ति अवतार
भगवान शान्तिनाथ

यह कथा शान्ति अवतार-शान्तिनाथ के तीर्थंकर जन्म में आने से पूर्व के कई जन्मों से प्रारम्भ होती है। उन्होंने श्रीसेन, मेघरथ आदि प्रतापी एवं चक्रवर्ती सम्राटों के रूप में जन्म लिया और कठोर तप ध्यान करके तीर्थंकर बने।

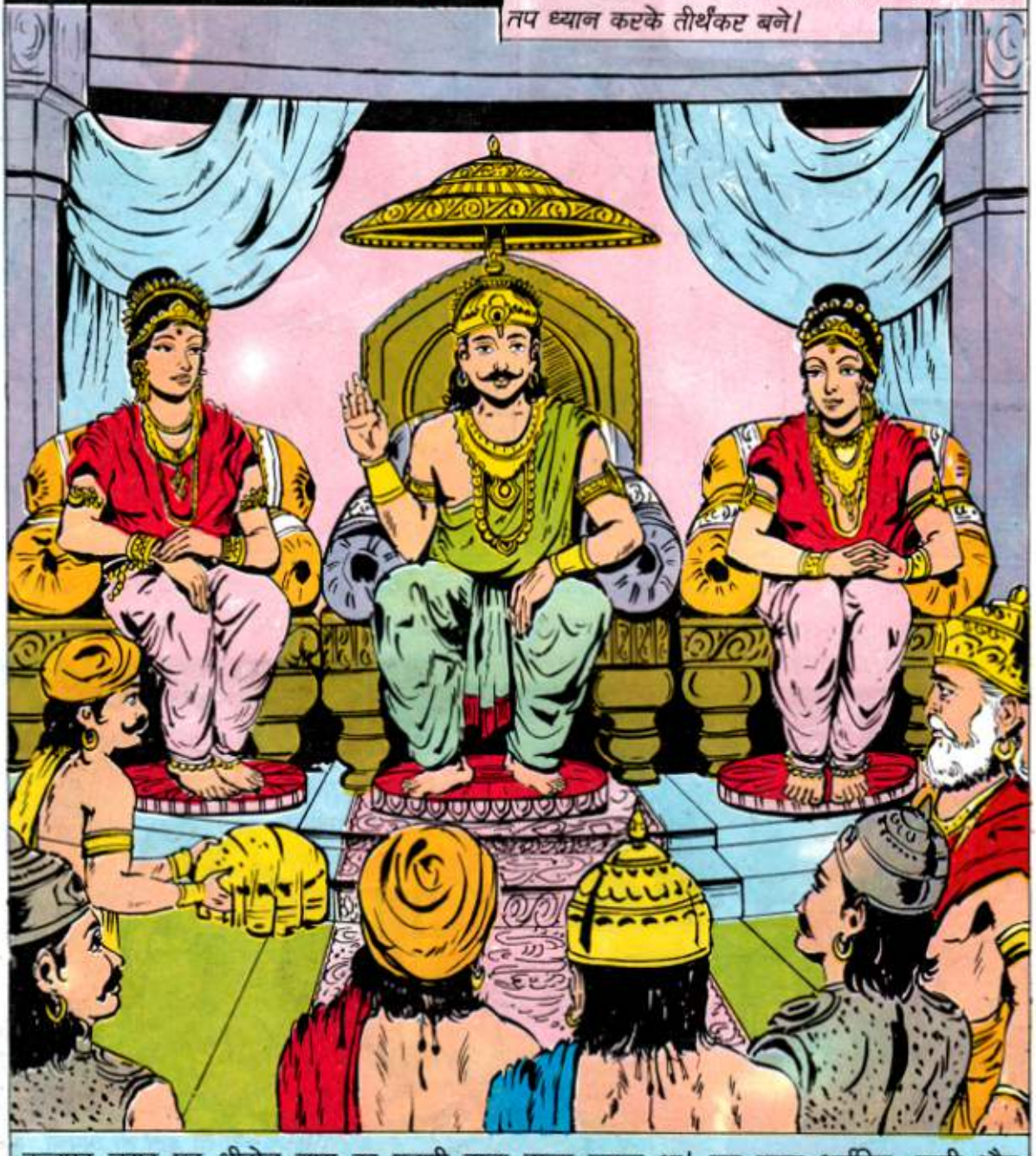

रत्नपुर नगर पर श्रीसेन नाम का प्रतापी राजा राज्य करता था। वह बहुत धर्मप्रिय, दानी और प्रजापालक था। राजा के अभिनन्दिता और शिखनन्दिता नाम की दो सुन्दर और शीलवती रानियाँ थीं। रानी अभिनन्दिता अपने उत्तम स्वभाव और शील के कारण सभी की प्रिय और प्रशंसा पात्र थी।

समय आने पर रानी अभिनन्दिता ने दो सुन्दर पुत्रों को जन्म दिया।

वाह ! चाँद सूरज जैसे इन पुत्रों का नाम हम इन्दुसेन और बिन्दुसेन रखेंगे।

जब दोनों राजकुमार सात वर्ष के हो गये तब उन्हें शिक्षण के लिए गुरुकुल भेजा गया।

दोनों भाई अत्यन्त मेधावी थे। वे सभी कलाओं में बहुत जल्दी पारंगत हो गये।

कौशांबी नगरी के राजा बल ने जब उनके विषय में सुना तो अपनी पुत्री का विवाह इन्दुसेन से करने की इच्छा से राजकुमारी को रत्नपुर भेजा। राजकुमारी के साथ एक दासी भी आई थी। वह अत्यन्त रूपवती थी। दोनों भाई दासी के रूप पर आसक्त हो गये।

ओह ! कितनी सुन्दर है यह! मैं तो इसी के साथ विवाह करूँगा।

मैं तो इसे ही अपनी पत्नी बनाऊँगा।

दासी को लेकर दोनों भाइयों में झगड़ा हो गया। तलवारें खिंच गईं। राजा श्रीसेन ने सुना तो तत्काल वहाँ आये।

पुत्रो ! एक दासी के लिये भाई-भाई आपस में युद्ध कर रहे हो? धिक्कार है तुम्हें। बन्द करो यह लड़ाई।

परन्तु राजा का समझाना व्यर्थ गया। निराश होकर महाराज अन्तःपुर में आ गये।

एक स्त्री के लिए भाई, भाई के खून का प्यासा हो गया है। अब यहाँ राजलक्ष्मी ज्यादा दिन तक नहीं टिक सकेगी।

निराशा और दुःख के गहरे आघात से राजा ने प्राण त्याग दिये। पति की मृत्यु से दुःखी होकर दोनों रानियों ने भी शरीर त्याग दिया।

राजा श्रीसेन और रानी अभिनन्दिता के जीव उत्तर कुरुक्षेत्र में पति-पत्नी के रूप में उत्पन्न हुये।